विश्व मानव की आवाज

विश्व मानव की आवाज

दिनेश चन्दोला

अनक्रम

आतंकवाद–मानव का घिनौना कत्य

आज मानव का विभित्स रुप कैसा ?
मानव का मानव पर अधिकार कैसा ?
गोली, बारुद, बन्दूकों का प्रयोग कैसा ?
प्रेम–भाईचारा. परिवारों का बलिदान कैसा ? ।।1।।

भटकते युवाओं/परिवारों को लालच देकर
अपने आगोश में जोड़ता यह संगठन कैसा ?
युवा शक्तियों को हिंसक अपराध दीक्षा देकर
कत्ल. अपहरण यह आतंकी संगठन कैसा ? ।।2।।

उसके लिए न बच्चे, सगे सम्बन्धी
उसके लिए यह दौंड मात्र अन्धी।
मानव की यह कैसी दरिन्दगी।
जो मानव की छीन रही अमल्य जिन्दगी।।3।।

आपसी सहमति, अनुशासन, सहयोग है दूर
क्यों हो गया है मानव इतना शुष्क और क्रर
और मारकाट करने को है इतना मजबूर
मानव बम बन गया है फिदाइन का रूप।।4।।

लश्कर, बोकोहरम, आई.एस.आई.एस. जैसे भेडिया संगठन
मानव जाति के है। घोर कठोर दुश्मन
इनका न कोई धर्म, वतन, नियम–कानून
साम्राज्य कब्जा कर मानव का करते है दमन।।5।।

आतंकवाद का यह मानव कृत्य कैसा,
विश्व के किसी भी कोने में पड़ सकती है उसकी छाया
दहला सकता है क्षण भर में मानव की काया
क्या यह होगा भविष्य में सर–असर का संग्राम जैसा।।6।।

सीरिया पर आईएसआईएस का आतंक

ऐ दशहतगर्दो आतंकियां, फिदाईनों विश्व शान्ति का खतरा न बनों.
देश पर अधिकार करके आतंक, गृह युद्ध का साया न बनों।
धर्म, मजहब के नाम पर विश्व मानव को भ्रमित न करो,
और देशवासियों को देश छोडने को मजबर न करो।।1।।

आइलन कुर्दी की शहादत ने विश्व को झकझोर दिया है।
और तुम्हारे घिनौने कृत्यों को पर्दाफाश किया है,
देशवासियों को अपाहिज व शरणार्थी बना दिया है।
जो यरोपीय देशों में पनाह/शरण की गजारिश किया है।।2।।

ईश्वर/खुदा ने तुम्हें जन्म दिया मानव, अपाहिज सेवा करने
जीवन को न गंवाओं, दहशतगर्दी छोड़ों मानव प्यार करने।
सोच धनात्म करों, विश्व के गरीब/कुचलों को उबारने,
विश्व मानव देख रहा हर घडी तम्हारे कत्य घिनौने।।3।।

व्यर्थ ही देशवासियों पर अपनी बात न थोपों.
देश की जनता से मिलकर शासन चलाओ,
शान्ति पथ पर चलकर शान्ति का वातावरण पैदा करो,
तानाशाह न बनो. हठ छोडो. मानवता प्रदर्शित करो।।4।।

ऐ रूस, अमेरिका, चीन जैसे वीटो पावर वाले देशों
आपसी स्पर्धा भूल जाओ और मिल जाओ
आखिरकार शरणार्थी भी मानव ही है।
दशहतगर्द आईएसआईएस को शिकस्त दे दो
और देश में अमन, चैन व शान्ति पैदा करो।
विश्व तम्हारों कर्तव्यों का ऋणी रहेगा।

सैनिक-एक प्रहरी

खूब लड़ों, खूब लड़ों, खूब लड़ों. सीमा पर.
वीरों, शूरवीरों, सैनिको खुलकर
सिंह भांति गरजना करो/झपटों दुश्मनों पर,
देखते क्या हो कतर दो उनके सारे पर।।1।।
युद्ध की रणभेरी बज चुकी है,
सैनिक राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत हैं।
देश प्रेम की लहर जन-जन में हैं,
सीमा की और प्लाटून द्रुत गति से चलायमान है।।2।।
अगाध प्रेम से अन्धे होकर,
नहीं दिखाई दे रहा नदी, नाले, वन, पर्वत।
मद-मस्त निश्चल, जीवन की परवाह न कर,
सैनिक डटकर, कर रहे, आक्रमण दुश्मन पर।।3।।
तोप, टैंकर, मिसाइल दुश्मनों पर दाग रहे हैं.
हवा में युद्धक यान कवच बन उड़ रहे है।
धरती पर लोट-लोट जवानों की कतारें आगे बढ़ रही है।
दुश्मनों को लहु लोहान, शत्रु विहीन, जमी होती जा रही है।।4।।
जब देश का शूरवीर, सैनिक, प्रहरी,
जाग-जाग रखवाली करता सीमा पर।
तब देश का जन-धन-मन.

सुरक्षित रहेगा युग-युगों तक।।5।।
ऐ सैनिकों, शुरवीरों, प्रहरियों,
ये देश ऋणी है तुम्हारे बलिदान का।
तुम्हारे बच्चे इस देश के रत्न हैं,
युग-युगों तक होता रहेगा गुणगान तुम्हारे शौर्य का।।6।।

पेशावर पब्लिक स्कूल (बच्चों के)
(तहरीरे–तालिबान का हमला 6.12.2014)

वह परिवार की कोपिलें थी,
वह परिवार का भविष्य थी।
वह परिवार की उम्मीदें थीं,
देश दनिया का बचपन का।।1।।

वह दरिन्दों का भत्य, कत था.
बचपन पर हमला था,
बचपन ने क्या बिगाड़ा था,
अफसा जैसी शिक्षिका का बलिदान था।।2।।

खुदा के खातिर ऐ दहशतगर्दो, घिनौने कृत्य न करो,
महिलाओं/बच्चों पर जुल्म न ढाओ, परवर दिगार का याद करो.
तुम्हारे भी बच्चे, परिवार हैं तुम्हें तोफा दिया है उसने,
इस तोफे को सजाओ/बढाओं तम्हें एक मौका भी दिया है।।3।।

चाहे जो भी धर्म हो, मजहब हो सब एक ही हैं,
आखिर तुम्हें ओर हमें परवरदिगार की तरफ जोड़ते/खींचते हैं.
यह तुम अभी नहीं समझोगे, दहशतगर्दी तुम पर सवार है,
क्योंकि मानव पर तम्हारा अकेला नहीं कोई अधिकार है।।4।।
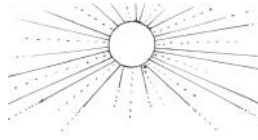
वह एक है

वह एक है, वह एक है, वह एक है.
वह सर्व-शक्तिमान है सर्वत्र है
वह आपके हृदय में हैं
परन्त रूप उसके अनेक हैं।।1।।

वह राम है ईसा है मोहम्मद है,
वह बुद्ध है, महावीर है, और साँई है.
उसे कुछ भी नाम दे दो,
वह सर्वत्र आपके साथ है।।2।।

आपकी सोच कुछ भी हो
वह आपकी अर्न्तात्मा है
यदि आप उसे समझ न पाये
यह आपकी विडम्बना है।।3।।

सारी सृष्टि को वो चला रहा है।
आपको सुरक्षित स्थान पर रखा है
आपको जीने योग्य बनाया है।
आपको बद्धि एवं चेतना दी है।।4।।

वह विवादों से, विषमताओं से दूर है
वह धर्म, सम्प्रदायों, पन्थों से अनभिज्ञ है
वह केवल मानवता की शिष्टता को पहचानता है
और प्रेम. भाईचारा एवं सौन्दर्य का तडका देता है।।5।।
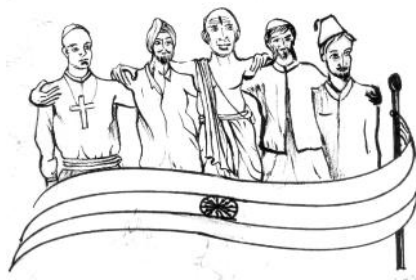
एक है कटम्ब हमारा

एक है कुटुम्ब हमारा
जिसकी हम सेवा करते है
एक है कुटुम्ब हमारा
जिसको साथ लेकर चलते है।
एक है कुटुम्ब हमारा
जिसकी अशिक्षा, गरीबी. दरिद्रता को हटाते है।
एक है कुटुम्ब हमारा
जिसकी समरसता. एकात्मकता. बराबरी में लाते है।।1।।

पिछड़ा वर्ग, दलित, अपाहिज, गरीब हरिजन.
होता है जन–जन का सम्बोधन,
कहलाता है विश्व मानव का बचपन.
होता है विश्व वातावरण से अनजान
उसकी करनी है सुरक्षा, शिक्षा, सेवा
बनाना है उसे विश्व मानव का जागृत यवा
यही है विश्व मानव का कुटुम्ब हमारा
जिसे विश्व मानव के सत्रों से हमने बांधा।।2।।

हम आपस में न कोई छआछत. भेदभाव. घणा रखते है

न कभी उनसे जाति, सम्प्रदाय, वर्ण, रंगभेद की बात करते है
मानव-मानव की तरह व्यवहार, गले मिलकर प्रेम करते है
उनके हमारे परिवारों का मिलन नित होता रहता है
उनके दिल की झिझक मिटाकर आत्म विश्वास पैदा करते है
एक दूसरे के सुख दुःख में सहायक, भागीदारी करते है
उनको समाज में सम्मान, स्वाभिमान और प्रतिष्ठा दिलवाते है
यही है कटम्ब हमारा जिसे हम अपने दिल/समाज से जोडते है।।3।।

कार्य कुछ भी हो, किसी तरह का हो, मिलकर करते है
अपने-अपने आराध्य की आराधना एक ही पजा स्थल पर अपनी-अपनी तरह से करते है
एक ही कुएं/ स्रोत का पानी पीकर अपनी प्यास बुझाते है
त्यौहारों में, खुशियों में एक साथ सपरिवार बैठकर भोजन/आनन्द प्राप्त करते है
सदियों से चली उनकी निराश भावनाओं (कुठांओं) को मिटाते है।
यहीं है कुटुम्ब हमारा जिसका प्रेम. सह्रदय. नजदीकियां हम प्राप्त करते है।।4।।

जो स्वच्छ नहीं रहते उन्हें प्रेम से स्वच्छ रहने का पाठ पढाते है
जो शिक्षित नहीं हैं उन्हें शिक्षा देकर शिक्षित करते है
उनकी बस्तियों में जाकर बाह्य/भीतर स्वच्छता का अभियान चलाते है
हर घर में शौचालय निर्माण की प्रेरणा देते हैं
उनके बच्चों, स्त्रियों की रूढ़िवादी विचारधारा से मक्ति दिलाते है
यही कुटुम्ब हमारा जिनके दिल में
स्वच्छता की धारा प्रवाहित करते है।।5।।

हमारे कुटुम्ब में यदि कोई नवशिशु अवतरित होता है
किसी धर्म, सम्प्रदाय, जाति के मंत्रों से नहीं पूजा जाता है
उसे विश्व मानव के संस्कार/ मंत्रों से नवाजा जाता है
यवा होने पर सभी धर्मों को समान रूप से स्वीकार करते है

एकात्मकता, शिक्षा अहिंसा के बल पर विश्व को चलाते है
विश्व में असमानता भेदभाव दूर कर प्रेम संचार करते है
यही है कटम्ब हमारा. जो विश्व मानव का स्वरूप कहलाता है।।6।।

हमारे कुटुम्ब के पूजा स्थल में सभी धर्मों के देवता निवास करते है
जो आराध्य की मनस्थिति के अनुसार पूजा स्थल में परिवर्तित हो जाता है
उसके प्रवेश होने पर दिल में प्रेम भाईचारा, परहित का संचार होता है
और अराध्य देव की पूजा, अपनी विधि से, करते हुए नमन करता है
जो वह देखता है, कर्म करता है, महसूस करता है छता है या बोलता है
सब एक ही धर्म है उसको सत्य कहता है
यही है कटम्ब हमारा जो मानव भावनाओं में समरता लाता है।।7।।
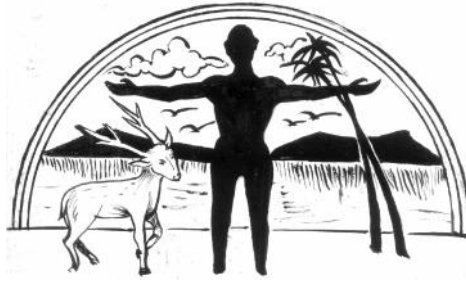
सष्टि प्राणी अदश्य शक्ति

सृष्टि यूं ही बनती बिगड़ती रहेगी।
कण–कण का अस्तित्व भी बदलता रहेगा।
समय में भी यूं ही परिवर्तन होता रहेगा।
मानव भी जीवन के अन्तराल में कर्म करता रहेगा।।1।।

मानव अमर न हो सका।
सर्दी, गर्मी, तूफान, वर्षा न नियन्त्रित कर सका।
पर्यावरण भी एक व्यथा
बाढ. भकम्प विपदा से न बचा सका।।2।।

जड़ का भी यों बदलना
आज जहां धरातल है, कल जल ही जल है
आज जहां पर्वत है कल वहाँ धरातल है
आज जहां नदी, नाले, वन पर्वत है।
कल वहां मरूस्थल है।।3।।

कीट, पतंगो, जन्तुओं का क्या कहना ?
निश्चित अंतराल में अस्तित्व खो देना
ताकतवर का कमजोर पर हावी होना।
यहीं यह नियति का कारनामा।।4।।

हे मानव, क्या सृष्टि एवं समय को अनुकूल कर सकेगा ?
तारों, ग्रहों, सूर्य को संतुलित कर सकेगा ?
मानव जीवन के अन्तराल को बढ़ा सकेगा,
अदश्य शक्तियों से सामन्जस्य स्थापित कर सकेगा ?।।5।।

फल और बसन्त

फूल-फूल है कूल-कूल है
सुगन्धित बयार की गूल है
बसन्त की भीनी-भीनी दस्तक है
मदमस्ती बहकी महक है।।

चहुं और रंग ही रंग, उमंग है
उड़ती तितलियां, जुगुन हजारों संग है
जन-जन, मन-मन, वन, क्रंदन है
बहती नदियों की तरंग सतरंग है।।

भवरों की मिनमिनाहट है
चिड़ियों की चहचहाट है
ठण्डी-ठण्डी, भीनी-भीनी बयार है
बोली यह हमारी ही सगबगाहट है।।

वृक्ष भी झुककर नमन करते है।
नई-नई कोपलों, फूलों, बौर से लदे हैं
विनती कर रहा दिनेश सदे में (मौन)
बयार चलती रहे ऐसी, जब तक फल न पके है।।

प्रेमी प्रेमिका के जोड़ने का अन्त: मल है
माल्यार्पित अतिथि अति बिह्वल है
मानव हृदय शोधित निर्मल है
भव्य मंदिर/पजा स्थल बिना निर्मल है।।

मत्य है या परिवर्तन

यह एक ऐसा सत्य है,
जो सत्य को असत्य कर देता है,
सृष्टि में मानव से बढ़कर कोई है,
अदश्य परमपिता परमेश्वर का स्मरण करता है।।1।।

जो संसार में जन्म लेता है,
अपने जीवन का अंत लेकर आता है.
उसे न कोई अमर/बचा पाया है,
उदभव एवं अंत का मध्य स्मरण कराता है।।2।।

वह परिवार में दु:ख विलाप का अहसास कराता है.
वह परिवार के एक सदस्य की कमी बताता है,
उस सदस्य द्वारा कार्यों/ उपकारों का स्मरण कराता है,
जीवन का अन्त यही है. विधि विधान बताता है।।3।।

उसके लिए न कोई अलौकिक शक्ति है.
न कोई तपस्वी, ज्ञानी, अज्ञानी है,
न कोई धनी-निर्धन नि:सहाय है,
वह असंभावी है. वह असंभावी है. वह असंभावी है।।4।।

वह शरीरों का वियोग है,
आत्मा का वस्त्र विसर्जन है,
जन्म के बाद मरने से पहले,
अवध्य, अविज्ञानी, आत्मा का श्रंगार है।।5।।

अनादिकाल से मानव यही सोचता आया है,
क्या उसके लिए यही एक विडम्बना है,
जो उसको प्रभु द्वारा अपनी और खींचता है,
बद्धि चेतन्य होते हए भी भटक न जाए, चेताता है।।6।।

वह सर्वव्यापी है समयान्तर बताती है,
कण कण भी इसके आगोश में आते है,
सूर्य, तारों, पुंजो भी अपना अस्तित्व खो देते है,
वक्ष, नदी, पर्वतों का क्या कहना, मरना/परिवर्तन नियति है।।7।।

यदि मत्य/परिवर्तन न ह्रोता

मानव मानव पर हावी होता,
प्रेम, परहित, त्याग, भाई-चारा त्याग कर,
अस्त्र, शस्त्र, अपराध, युद्ध का बोलबाला होता,
जीव-जन्तु, पेड़-पौधों, कीट-पतंगों का जमावड़ा होता,
मानव तारों, ग्रहों पर अधिकार जमाने की सोचता और.
अपने अस्तित्व के लिए लडता होता।।

सृष्टि का पदार्थ, शक्ति में नहीं बदलता
प्रकाश, आकाश, गुरूत्वाकर्षण और शन्य का न होता साया
तारों-पुंजो, सुर्यो इत्यादि विलप्त होते
सृष्टि एक ठोस गोला होता
परमपिता परमेश्वर का नाम न होता
सत्य का अस्तित्व भी नहीं रहता।।

नोट-गीता के अनुसार

1. जीव पदार्थ के लिये मृत्यु होती है जबकि जड पदार्थों के लिये परिवर्तन होता है।
2. असंभावी-अवश्य संभव है।
3. जब तक मनष्य चेतन्य है वह सत्य है. मत्य होने पर पार्थिक शरीर असत्य है।

नव वर्ष-एक सोच

नववर्ष का हुआ, आगमन
उत्साहित चित्त हुआ है प्रसन्न
सोचकर वह मनन चिंतन
करूंगा भविष्य में कठोर परिश्रम
लक्ष पर होगी मेरी लगन,
न्यौछावर करूंगा तन-मन-धन।।

चाहे कितनी भी हो कठोर विपत्तियां,
परिस्थितियां देती रहे बार-बार रूलाइयां.
शरद (शीत) देती रहे कड़ी ठिठराइयां,
पावस (गर्मी) उगलती रहे गरमाइयां/लू-आइयां.
प्रकोप/तूफान/बरसात भी देती हो, बधाइयां,
भटकंगा नहीं लक्ष से. दढ होगी भावनायें/रूवाइयां।।

परिश्रम के साथ-साथ स्वस्थ रहंगा.
मन में धनात्मक सोच रखूंगा,
वरिष्ट, वृद्धों का सम्मान करूंगा
कनिष्ठ. मित्रों के साथ कदगां/खेलंगा

परन्तु लक्ष के प्रति सजग रहूंगा,
कदम-कदम पर आगे बढता जाऊंगा।।

तां-तां लगा दूंगा बधाइयों का,
लक्ष होगा देशहित, मानव हित सोच का,
आने वाले, जाने वाले शुभकामनाओं का.
परिजनों, वृद्धों, युवाओं, प्रेमियों का,
आदान-प्रदान होगा शुभ संदेशों का,
प्रेम रूपी बयार बहेगी मानव सोच का।।

अधूरा है जीवन मानव का,
जो करता है बिना ईश-स्मरण का,
देता है साथ विपत्तियां, खुशियों, दुखों में इसका
धैर्य, सहनशीलता, लगन, लक्ष है इसका.
कृतघ्न रहा है नववर्ष भी इसका,
मांगता है भावी समद्धि. खशी और सफलता।।
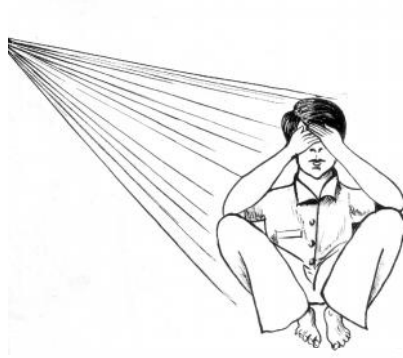
त (ईश्वर) अदश्य क्यों हैं?

तू सर्वव्यापी है, पर अदृश्य है
केवल तेरी कल्पना की जाती है
तू कहां रहता, क्या करता और रूप कैसा है
यह किसी को पता नहीं होता है।।1।।

कोई तुझे भगवान, ईश्वर, परमात्मा कहता है
कोई तुझे गौड, प्रभु, ईसा-मसीह कहता है
कोई तुझे खुदा, रब, परवरदिगार कहता है
कोई तुझे नानक, गुरूग्रन्थ साहिब कहता है
तो कोई विभिन्न रूपों में नवाजता है
क्योंकि त सदा अदश्य रहता है।।2।।

सृष्टि के छोर में बैठा यह चक्र कौन चला रहा है,
तारों उल्काओं, क्षीरायण(मिल्की-वे) का रोशनी कौन बिखेरता है.
प्रतिदिन सूर्य, चन्द्रमा, तारों-पुजों को कौन नियमित चलाता है.
सृष्टि का प्रारम्भ कहां और अन्त कहां है.
सबको तूने मध्य में लटका रखा है,
क्या तेरे अदश्य शौर्य का रूप ऐसा ही है?।।3।।

मनुष्यों की वर्षों से पीढ़ियां पैदा होती तथा मरती रही है,
लेकिन अभी तक भूकंम्प, बाढ़, प्रकृति इत्यादि नहीं समझता.
जीने तथा मरने के अन्तराल में केवल धरा पर,
स्वार्थ, लालच, आपसी फूट तथा अधिकार की छाया है.
फिर भी तू चुपचाप देखता रहता है,
क्योंकि मनष्य पर तेरी अदश्य. असीम कपा है।।4।।

जब–जब कोई दुखित होता है
असफलता, नैराश्य, आंतकवाद घेरता है
सभी अपने तथा अपने जन–परिवार को बचाते है
केवल तेरा नाम लेकर सहते तथा समय काटते है
यह सोचकर कि, कभी तू मेहरबान होगा
अपने अदश्य आशीर्वाद से उनकी खशियाँ लौटाएगा।।5।।

क्या तू हमेशा यही सोचता रहता होगा जब
संसार में अधर्म, व्यभिचार की छाया गहरायेगी
तब कलियुगी कृष्ण अवतरित होकर मानव जाति को
विराट रूप दिखलायेगा
और तू अदृश्य नहीं रहेगा क्योंकि मानव
सतयग की ओर अग्रसर होता रहेगा।।6।।

बजर्ग- अति वरिष्ठ नागरिक

जिन्दगी के सफर में ऊंच-नीच झेलता स्वरूप कैसा,
उम्र बढ़ती, पर शक्ति, साहस, हिम्मत का ह्रास कैसा.
मानव का यह बढ़ता-घटता रूप कैसा,
जो सम्बोधित होता बजर्ग. अति वरिष्ठ नागरिक जैसा।।1।।

कमर झुकी, लठ्ठी सहारे, चलता धीरे-धीरे एक
दृष्टि कम, सिर के बाल, दाड़ी, मूंछ सफेद
दुबला/पतला गांठा शरीर, झुर्रियों के निशान
फिर भी उसका दिल व दिमाग है जवान।।2।।

बच्चों के संग बच्चा बन जाता.
कूदता, दौड़ता, हंसता, खेलता
युवाओं को संस्कार, अनुभव, उत्साह बढ़ाता.
बुजुर्गों से दोस्ताना, स्वाभिमान झलकाता
और हंसकर कशल क्षेम पछता. जीवन बढाता।।3।।

सोचता, जीने की अधिक चाह करता,
परिवार संग खेलता. हंसता. सहाना लगता.

शान्ति प्यार मोहब्बत, सम्मान चाहता,
इसी में है एक सच्चे बजर्ग का वास्ता।।4।।

अन्तिम क्षण, कुछ नहीं चाहता,
अपने, सगे सम्बन्धियों को पास देखता.
छूता, घूरता, मुस्कुराता,
मौन धारण कर आंखे बंद करता.
और देव लोक में चला जाता,
और पार्थिव शरीर को छोड जाता।।5।।

अधरी कहानी

तेरी मेरी अभी अधूरी कहानी थी.
तू क्यों जल्दी छोड़ चली थी,
आने वाली मद मस्त जवानी थी,
त क्यों इतना विचलित हो चली थी।

तेरा मेरा हुआ चिर स्मरणीय मिलन.
सपने सजाने की होड़ चली थी.
तू ने यह भी न सोचा,
तेरा मेरा जीवन चलता रहे चली–चली...

अकेलापन मुझे काटता है
अकेले की दुनिया में नहीं चली.
तेरी यादों ने हमला बोला,
दिल हआ भारी मेरी एक न चली।

तेरे साथ बीते सुनहरे लम्हों।
यादगारों को दिल में संजो आई है।
मेरे चेहरे में मुस्कुराहट आई
अचानक हंसी की खिलखिलाहट फट आई है।

परिजनों/ बच्चों के साथ हंसकर. खेलकर
तेरे सपनों को पूरा करता हूँ.
तेरी मेरी अधूरी कहानी को
परा करने को प्रयासरत रहता हं।

विश्व-प्रार्थना

हे प्रभो!
मानव, मानव के हित में कार्य करता रहे,
जन्म-जन्मान्तर तक यह रीति चलती रहे।
आपसी द्वेष अंकुरित न हो, सदा मैत्री भाव रहे।
सदियों/शताब्दियों तक यहीं विचारधारा चलती रहे।
यदि कभी मन में विषम-जागृत हो,
तो भटके हओं के समान. सत्य-पथ पर अग्रसर होता रहे।।1।।

सारा विश्व हो एक परिवार
ऋग्वेद के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की हो ललकार।
अपाहिजों, वृद्धों का हो हमेशा सेवा-सत्कार
प्रत्येक पूर्ण स्वतंत्र, कर्म एवं विचार से
युवाओं, विशेषज्ञों के कन्धों पर हो सारी बागडोर
बच्चों का लक्ष्य हो शिक्षा. नैतिकता. कर्त्तव्यपालन की ओर।।2।।

तेरा यह मानव-रूपी चैतन्य आकार।
श्रृंगारिक स्वस्थ-कार्य-करण का क्षेत्र (शरीर) हो साकार.
शक्ति तथा बुद्धि का जिसमें है प्रचुर भण्डार.
आसुरी स्वभाव (प्रकृति) का न हो संचार,
कर्म. श्रम. आशावान दैवीशक्ति का हो कारोबार.

क्योंकि वह पजता है तेरी अलौकिक शक्ति को निरन्तर।।3।।

मानव की आपसी विचारधारा,
उसमें अंश न हो धर्म, जाति, सम्प्रदाय, बंटवारा,
आंतक, क्षेत्रीयता, अलगाववाद, असमानता का पारा.
केवल एकात्मकता, परहित, प्रेम ज्ञान की हो छटा।
हर एक पर मानव-जीवन पद्धति की हो साया।
जब तब सर्य. चन्द्रमा बिखराते रहें. उज्जवल धारा।।4।।

तूने यह रूप (प्राकृतिक) बिखेरा चारों ओर,
जीवों की परवरिश करता रहा है चहुँ ओर।
उच्चपर्वत, नदी, नाले, घाटियों, जीव-जन्तु
पेड़-पौधे, हरे-भरे लहलहाते सुनहरे मैदान,
परन्तु करते/लुभाते रहे हैं मानव को सदियों से
मानो धरा ही स्वर्ग बन गई है तेरी अनकम्पा से।।5।।

जितने साधु, सन्त, योगी, उपदेशक. संस्थापक. ज्ञानी.
इस धरा पर अवतरित होते हैं वे,
मानव-जीवन-पद्धति का पाठ अलग-अलग पढ़ाते रहे है.
प्रकृति एवं पुरूष के परस्पर सम्बन्ध बताते रहे हैं,
वह भ्रमितों को सही रास्ता बताए, अपाहिजों वृद्धों की सेवा करें,
परन्त मानवता का बंटवारा न करें क्योंकि सत्य एक ही है।।6।।

भय, रोग, युद्ध, देवी-आपदा से मुक्त हो यह संसार,
योग, सुख, शांति, परहित, ध्यान (मेडिटेशन) पर मानव हो अग्रसर.
मानव, जीव-जन्तु एवम् प्रकृति का हो तालमेल,
वातावरण दूषित न हो, चाहे मानव खेले कितने खेल,
हे, सर्वशक्तिमान परमपिता परमेश्वर, यह दो वरदान,
तेरी आराधना करते हुए/अमर हो जाए सृष्टि में यह इंसान।।7।।

नोट- एकात्मकता- अपने धर्म को मानते हए दसरे धर्मों का सम्मान करना तथा उनके कार्यक्रमों में सम्मलित होना।

प्रसन्नता

मन में तीव्र इच्छा-शक्ति ही प्रसन्नता लाती है.
लक्ष्य में सफल होने से ही प्रसन्नता आती है.
धन एवं वंश-वृद्धि भी प्रसन्नता लाती है
जनसम्पर्क एवं जनविश्वास से भी प्रसन्नता आती है।

प्रसन्न रहने वाले ऊर्जा से भरे रहते है
हमेशा कुछ कर दिखाने वाले होते है
नई चुनौतियां को झेलने वाले होते है
जीवन में हर पल हर क्षण मस्कराते रहते है।

यह प्राचीन किंवदन्तिया/परम्पराओं के आधार पर प्रकट की जाती है
विवाह, वंशवृद्धि तथा लक्ष्य-प्राप्ति पर भी प्रकट की जाती है
अच्छी फसल, सुहाना प्राकृतिक मौसम भी इसको लाता है
जो. दसरो की खशियों में शामिल होकर प्रकट किया जाता है।

मिष्ठान, फलफूल/उपहार का होता है आदान-प्रदान
गले मिलकर शुभकामनाएं देकर तृप्त होता है मन
मित्रों, सहयोगियों के साथ होता है दावतों नाच-गानों का उत्सव
ईश्वर के दरबार में भी जाकर मांगा जाता है वरदान।

प्रसन्नता के लिए हंसिये-हंसाइयें एवं मुस्कुराइये,
दिल में गम होने पर भी प्रसन्नता से पुष्प बांटिये
खूबसूरत वादियों में घूमिये, निहारिये, आनन्द प्राप्त कीजिये
आशावान. प्रेरणादायक कष्टनिवारक बनकर पथ्वी को स्वर्ग बनाइये।

(नोट-प्राचीन किवदन्तियों/परम्पराओं का तात्पर्य रामलीला. दिवाली. होली. क्रिसमस. ईद इत्यादि से है)।

आत्मा की आवाज

सूरज आयेगा, गर्मी लायेगा।
सोते जन–जीवन को उठायेगा
प्रत्येक जीवन में चेतना लायेगा
कर्म करो. प्रेम करो. संवाद लायेगा।।

जीवन दिया है, चेतना दी है
कर्म करते रहियेगा।
बुद्धि दी है, अंग दिए है
अच्छे–बरे का विचार कीजिएगा।।

जीवन में पाबंदी का पालन कीजिये
निराश जनों को आशा–किरण दीजिये
सोते हुए जनों की चेतना जगाइये
भटकते हओं को सही रास्ता दिखाइये।।

झगड़ों/फसादों से बचिये तथा दूसरों को बचाइये
'सादा जीवन' उच्च विचार' को दोहराइये
दूसरे के दिल में अपने को बिठाइये
यह सब करते हए भी कर्त्तव्यों को न भलाइये।।

न दु:ख हो, न दारिद्रय हो, न वैमनस्य हो
न आपदा हो, न युद्ध हो, न झगड़े साकार हों
सर्वत्र प्रसन्नता भाई-चारे का वातावरण रहे
प्रत्येक मानव अपने लक्ष्यों को परा करता रहे।।

जीवन क्या है?

जीवन क्या है?
जीवन ही जीना है,
जीने पर ही मनुष्य कर्म करता है,
जीने पर ही सुख-दु:ख भोगता है।
जीने में ही आपसी सम्बन्ध बनाता है
जीने पर ही प्रकृति के रहस्यों का उजागर करता है
जी कर ही बड़े-बड़े साधु, सन्यासी और सम्राट बने
जी कर ही अवतार, अवतरित हुए,
जी कर ही मनुष्य-मनुष्य में अन्तर आया
जी कर ही देश, धर्म, गटबन्दी की पडी छाया।।

विश्व-बन्धुत्व का नारा जीवन में कब साकार होगा,
द्वेष, युद्ध, अकाल, गरीबी पर कब परहेज होगा?
मित्रता, शांति, सह-अस्तित्व, भाई-चारा, अपाहिज सेवा,
मानव जीवन का लक्ष यही, यही है ईश्वर की सच्ची सेवा।।

जीवन की बागडोर सम्भालता है समय
जीवित-निर्जीव का अन्तर बताता है समय
अच्छे-बुरे का अन्तर बताता है समय
प्रकति रहस्यों के अन्तर को बताता है समय।

प्रकति की बेटी

वह प्रकृति की बेटी है, वह समुद्र की गहराई है।
वह फूलों की कोमलता है, वह गंगा की पवित्रता है।
वह विश्वास-योग्य चैतन्य मूर्ति है,
वह दुर्गा, लक्ष्मी, पार्वती का प्रतीक है।

वह पुरूष की सहभागिता है,
वह पुरूष की जीवन-संगिनी है,
जिसके बिना पुरूष अधूरा है,
जो मानव की जन्मदायिनी है,
बेटी, पत्नी, माँ, दादी का है रूप,
फिर साहस, प्यार, प्रेरणा की है स्रोत।

जो घर-परिवार बसाती है और माँ लक्ष्मी कहलाती है,
निःस्वार्थ बच्चों का लालन-पालन करती है,
स्वास्थ्य, चैतन्य, प्रेरणायुक्त जीवन देती है,
स्वयं कांटों में रहकर, उसको फूलों में सुलाती है,
उसमें सीता, मरियम, झांसी की रानी जैसा स्वप्न देखती है,
लिंकन, गांधी, मण्डेला जैसे शांतिदूतों को अवतरित करती है।

यदि पुरूष ईश्वर का प्रार्थना/आराधना करता है.
तो पुरूष इसका भी ऋणी है,
जो उसके जीवन को जीने-योग्य बनाती है,
जो उसके जीवन में खुशियां एवं बहार लाती है.
वृद्ध-अवस्था में उसकी बैसाखी बन जाती है.
पग-पग पर प्रेरणा एवं शक्ति बन जाती है।

यह पुरूष समाज की विडम्बना है.
जो उसे बराबरी ने नहीं लाता है।
लगती है उस पर अनेक पाबन्दियां,
कैद रखती है खूबसूरत गुड़ियों की तरह,
जिसने अवतरित किया है राम, ईसा, हजरत मोहम्मद जैसी शक्तियों को.
शत-शत प्रणाम है ऐसी देवी को. ऐसी प्रकति की बेटी को।।

जिसका न कोई

जिसका न कोई धर्म है, जिसका न कोई परोपकारी लक्ष्य है.
जिसको न मानव से प्रेम है, जिसको न ईश्वर का डर है.
जिसको न परिवार सगे-सम्बन्धी, मित्र से लगाव है,
वह संसार में जीवित होकर भी निर्जीव होता है।।1।।

जो मानव जातियों में भेदभाव करता है,
जो मानव को बांट कर अपने स्वार्थ पूरे करता है.
जो मानव जाति पर स्वयं अधिकार चाहता है,
वह जीवित होकर भी तानाशाह जैसा होता है।।2।।

जिसका न कोई देश है, जिसका न कोई भेष है
जिसका न कोई नियम है, जिसका न कोई संयम है
जिसका न कोई देशवासी है, और न कोई परदेशी है
वह जीवित होते हुए भी निष्क्रिय हो जाता है।।3।।

जिस भी समाज, जाति का आक्रामक एवम् आतंकी लक्ष्य होता है.
जो अपनी बात दूसरों पर जबरदस्ती थोपता है,
जो भी अपराध एवं आतंकवाद का साथ देता है,
उसका उदभव एवं विनाश का समयान्तर थोडा होता है।।4।।

आज हर प्रकार से शक्तिशाली होना कितना अनिवार्य है
अणु, विध्वंसक अस्त्र, अर्थ होना कितना आवश्यक है
ज्ञान-विज्ञान में शीर्ष, खुशहाली आपसी प्रेम परिवार्य है
भूखों, पीड़ितों को भोजन और सहायता तथा आतंकी एवं
आक्रमक को दण्ड अनिवार्य है।।5।।

पति पत्नी (यगल)

दो आत्माओं का आपसी मिलन,
दो दिलों का आपसी प्रेम-जुड़न,
दो भावनाओं का आपसी विश्वास-चिंतन
परूष एवं स्त्री का अटट भावी बंधन।

यह बंधन स्वर्ग में तय होता है
धरा में जोड़ा जाता है
पुरूष कहां पैदा होता है स्त्री कहां पैदा होती है
पता नहीं. फिर भी वहीं अंतिम निर्णय होता है।

पुरूष पति-परमेश्वर बन जाता है
स्त्री पत्नी-लक्ष्मी बन जाती है
एक परिवार स्थापित हो जाता है
जो अपने भविष्य के सपने सजाता है।

बच्चों का परवरिश निस्वार्थ करते है
संस्कार, जीवन शैली भविष्य बनाते है
जीवन की विपत्तियों का सामना करते है
वद्ध माता-पिता का सहारा बनते है।

आपसी शरीर स्पर्श करते न थकना
प्रेम से चुम्बनों की बौछार लगाना
चेहरों को बार-बार मुस्करा कर देखना
यही है शन्य में यगल का प्रेम प्रदर्शन करना।

यह युगल ईश्वर का ऋणी है
जो उनके जीवन-बंधन को स्थाई बनाता है
दहेज, उत्पीड़न, तलाक तथा बलात्कार
जैसे राक्षसों से उसकी सरक्षा करता है।

अपना जीवन संभालों

अपना जीवन संभालों, अपनों को पहचानों,
सष्टि के किस छोर पर पडे हो यह दिखलाओ।।

जीवन पाकर क्या तुमने रहस्यों को जाना है?
जीवन पाकर परमेश्वर को पहचाना है?
जीवन पाकर जीवन के लक्ष्यों को पहचाना है?
जीवन पाकर क्या सष्टि के अन्दर भ्रमण किया है?

कहां से तुम आये हो कहां तुम जाओगे?
जीवन का यह बहुमूल्य क्षण कैसे बिताओगे?
लक्ष्य तुम्हारा क्या है? आगे पीछे चलता रहेगा,
जीवन मरण रहस्य ढंढों अन्यथा यही चक्र चलता रहेगा।।

परमपिता परमेश्वर ने इस फल (सृष्टि) की रचना की है.
जिसमें असंख्य आकाश गंगाये, वृह्द प्रकाश-पंज.
अन्य रहस्यमय स्वरूप, बनते बिगड़ते दिखते,
मानो बहता रस. बीज अनेक रोमांचित कँज।।

तुम्हें फुरसत कहां जीवन मरण से,
आपसी झगड़ों एवं माया के जंजाल से,
इस सूक्ष्म भूभाग पर अधिकार जमाने से,
असंख्य बीतते क्षणों में डबे हो अहंकार से।।

फिर वहीं चक्र असंख्य बार चलाते रहोंगे,
देव दानवों का युद्ध धरा पर करवाते रहोंगे,
जीवन-जन्तुओं मानवों का सृजन युगों तक होता रहेगा.
मानव आधार (धरा) विषेला होकर नष्ट हो जाएगा।
पहचानो आत्मा को, पहचानो परमात्मा को
यह मानव शरीर भरा है रहस्यमय तथ्यों से
अपना जीवन संभालो, अपने को पहचाने
सष्टि के किस छौर पर पडे हो पहचानो।।

विश्व मानव की आवाज

आओ स्वागत करते है, हे विश्व मानव तुम्हारा,
हम बार-बार नमन करते है, हे शान्ति/यग परूष तम्हारा.
मानव, मानव के बीच रह कर,
शांति एवं प्रेम की धारा बहाकर,
द्वेष, लालच, दुर्भावना को त्यागकर,
निस्वार्थ सेवा भक्ति करते हो मानव पर,
यही कहता है सात्विक आन्दोलित रग-रग तुम्हारा सारा।
प्रकति नियम अनसार चलता रहे मानव जीवन सारा।।1।।

कहीं साम्प्रदायिकता, कहीं आंतकवाद,
कहीं वैमनश्यता, कहीं अशांतवाद/अलगांववाद
तुम सबके बीच निडर, निर्भीक, अंहिसक होकर.
बात ही बात में उनकी मानसिकता बदल कर,
विश्व को स्वर्ग, जीने योग्य बना देता है कर्म/तपस्या तुम्हारा.
यही कहता है सात्विक आन्दोलिक रग-रग तम्हारा।।2।।

विश्व में कहीं सूखा, कहीं अकाल, कहीं महामारी रोग,
झकझोर देता है/रो देता है मानव जाति को वे रोक-टोक,
परन्त यह शक्तिशाली/समद्धशाली कटटर राष्ट अपने स्वार्थ में लिप्त है।

मानव दु:ख दूर करने की चिन्ता नहीं, इनके लक्ष्य गप्त है?
इनकी गलत शक्ति/स्वार्थ को समरसता एंव
धनात्मक सोच में बदलो, एकात्मकता काम तुम्हारा।
यही कहता है सात्विक. आंदोलित रग-रग तम्हारा।।3।।

राष्ट्रों का विकास परमाणु शक्ति सूचना प्राविधि,
जासूसी, जैव नेट कम्प्यूटर कर रहा सब को आन्दोलित.
होड़ लगी है शक्तिशाली, समृद्धशाली राष्ट्र की,
मानव जाति को अंगुलियो पर नचाने की/अधिकार जमाने की.
वह कहते है हमारा ही कहना मानों, यही है उचित,
क्योंकि सभी मामलों में आपसे हम है अधिक विकसित,
इन विकसित देशों की बपौती/हिंसा को रोकना काम तुम्हारा,
कहीं इनके कर्म. अनसंधान/विचार. नाशकारी न हो देखना. काम तम्हारा।।4।।

राजस तामस गुणों में प्रेरित मानव
आज विश्व का वातावरण ऐसा है।
अपराधिक, रासायनिक, हिंसात्मक प्रयोगों द्वारा
खंडित करता है मानव, मानव को जैसा है।
चैतन्य शरीर विजित बन जाता है।
निर्जीव शरीर आत्मा का पलायन जैसा कहलाता है।

है विश्व मानव, तुम दूरदर्शी हो, अविजित हो
सभी की आत्माओं में तुम विद्यमान हो
ब्रह्माण्ड के कोनों-कोनों में तुम विचरते हो
मानव से बढ़ कर कोई है क्या तम जानते हो?
मानव ब्रह्माण्ड में अमर रहे
आत्मा शरीर का पन: मिलन होता रहे. क्या संभव करा सकते हो।

मानव अनंत वर्षों तक जीवित रहे/शरीर आत्मा मिलन होता रहे।
ब्रह्माण्ड में सदा घूमता रहे न सताये मत्य/दख
परमपिता परमेश्वर को ढूंढता रहे
यही हो प्रयास, यही हो लक्ष्य तुम्हारा
यही कहता है सात्विक. आन्दोलित रग-रग तम्हारा।।

मानव जीवन पद्धति

प्रात: सूर्य की प्रथम किरण का जब धरा पर आगमन होता है
मानव शौच, स्नान से निवृत हो, हाथ जोड़कर, सर्य/ईश्वर को नमन करता है।
अपने शरीर को बुद्धि, बल, चेतन्य से भरता है
भूत, वर्तमान, भविष्य के कार्यों की संरचना/समीक्षा करता है
परिवार को एक सभ्यता/सूत्र में बांध कर रखता है
यही है मल सोच का प्रारम्भ सिन्ध सभ्यता की एकता का।।1।।

प्रकृति (नेचर) ने दिया है बराबर उनको दिन-रात,
गर्मी बरसात, बसन्त..... छ: ऋतुओं की वर्ष की सौगात.
जिससे वह अपनी नित्य जीवन शैली को चलाते थे,
अनाज. फल. वनस्पति. दैनिक उपयोगी वस्त उपजाते/उपयोग करे थे।।2।।

प्रकृति ने उनकी मानसिकता ऐसी बनाई सचमुच थी,
विश्व चितंन, परजीव उदारवादी, ऐकतामूलक सोच थी.
प्रत्येक जीव में ईश्वर का अंश देखा, लोच/झुकाव,
हिंसा कट्टरपन, द्वेष, आतंक से था अनभिज्ञ/दराव.
सब स्वतन्त्र थे विचारो से, कर्मों से मन से,
किसी भी ईश्वरीय शक्ति की आराधना स्वीकारने से,
अच्छे बरे का विचार होता है. आत्मचिंतन. गरूओं. ध्यान से.

केवल मानव-जीवन पद्धति स्वीकार होगी प्रकति के नियमों से।।3।।

विदेशी ने जब क्षेत्र में प्रथम प्रवेश किया था,
जीवन शैली, प्रकृति(स्वभाव), आत्मदर्शन व्यवहार से विभोर था,
मेहमान/अनजान को उन्होंने (सिन्धु की जनजातियों) गले लगाया था.
उद्देश्य उसका कुछ भी हो, उसे दिया सुरक्षा-सम्मान-साया था.
इसी सिन्धु सभ्यता/दर्शन को हिन्दुत्व प्रचारित किया था,
जिसे अनाधिकाल से आदिवासियों/जन जातियों/कबीलों ने.
मानव-जीवन-पद्धति बतलाया था।।4।।

मानव-मानव को विभिन्न प्रकार से सम्मान दिया था,
पुरूष-नारी को परिवार परिभाषित करके वंश बढ़ाया था,
बच्चों/कनिष्ठ द्वारा माता-पिता, गुरूओं, ज्येष्ठों, वृद्धों को आदर दिया था।
पुरूष-नारी, पुरूष-पुरूष, नारी-नारी के कोमल सम्बन्धों को स्थापित
करके मानव को चिर आयु बनाया था,
मानव को प्यार. सेवा भक्ति. भाई-चारे का पाठ पढाया था।।5।।

विभिन्न जीव-जन्तुओं/वनस्पतियों को ईश्वर का अंश बताया था.
उनके जीवन को प्रकृति के अनुसार चलाया था,
सेवा करना, भोजन देना, उनको भी परिवार में शामिल करना था.
उनको विभिन्न रूपों में मानव उपयोगी बनाया था.
यही है हिन्दुत्व का अवधारणा, विचारधारा,
जिसको सर्वप्रथम विश्व ने पहचाना परखा था।।6।।

जब गौ-धूली का समय होता है सूर्य अस्त होता है
मानव अपने कर्तव्यों को पूर्ण कर पुनः परिवार में लौटता है
बच्चों का जीवन-पद्धति भूत, भविष्य से अवगत कराता है
तदोपरांत उनका शरीर निद्रां के आगोश में समा जाता है
फिर प्रातः दिनचर्या पुनरावृद्धि होती है, नित कर्मा में जुट जाते है
यही जीवन-पद्धति मानव को अमरता की और खींचती रहती है।।7।।

नोट– हड़प्पा कालीन सभ्यता तथा सिन्धु घाटी सभ्यता–
प्रारम्भ काल 5500 ई. प–3500 ई. प.
नाम– नव पाषाण युग
व्यवसाय, बस्तियां थी, खेती. पश पालन
3500 ई. पू.–2600 ई.प.
आरम्भिक हड़प्पा युग
शहरों का विकास व्यापार हुआ।
1800 ई.पू. जागे शहरों का ह्रास हआ. शहरी जीवन का त्याग
लेखन कार्य का ह्रास
1500 ई. पू.–1000 ई. पू.
आर्य प्रामि भारत पंजाब आये
वैदिक यग का प्रारम्भ हआ।
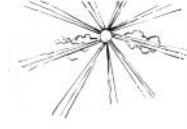
विश्व एकता एवं शांति

देश, देश से पूछ रहा विस्मय होकर,
मानव मानव को पूछ रहा चिंतित होकर,
स.रा.स. तोल रहा देशों को भयभीत होकर,
विश्व एकता कब होगी. होगी या नहीं होगी यह सोचकर।

राजनीतिज्ञों, शासनाध्यक्षों. समाज शास्त्रियों की.
होगी इससे कितनी सोच,
धर्माववेक्षको, सम्प्रदायों ज्ञानियों सन्तों की,
एकात्मकता पर होगी कितनी पहंच/सोच।

पहला पक्ष

विश्व के कई मानव समूह/गुट/कबीले.
है जिनकी सोच अलग-थलग,
अपने विचार थोपना, अधिकार जमाना.
प्रभत्व है उनके मन की ललक।

लालच देते है अर्थ झूठे सपनों का.
अनजान निर्धन. यवा बच्चों को.

गलत शिक्षा, हिंसा जेहाद का पाठ.
पढाते है बचपन से उनको।

चोरी छुपकर करते है आधुनिक.
अस्त्र शस्त्र प्राविधि का व्यापार.
विश्व मानव को बांधकर,
नचाना मात्र उनका अधिकार।

दूसरे देशों की धन–सम्पत्ति(सोना/तेल) अपराध.
व्याभिचार करना मात्र उनका लक्ष्य.
मानवता, भाईचारे, प्रेम सौहार्द को,
क्या जानों ये मानव रूपी राक्षस?

द्वितीय पक्ष

अति विकसित भी गर्वित है
शक्ति से, सम्पदा से, अनुसंधानों से
वह अविजित रहेंगें सदा उनकी सोच है,
अर्थ, अणु, सैनिक, आधुनिक प्राविधि से
देश देश के बीच गुट गुट के बीच अनेक भेद,
राजनैतिक, प्रतिद्धदिता, शक्ति प्रदर्शन. सीमा विवाद.
कहीं धार्मिक कट्टरता, कहीं गरीबी,
कहीं देवी–आपदा. सक्रामक रोग. कहीं रंगभेद।।

चितिंत है विश्व समुदाय उन अति विकसित कट्टरपंथी देशों से
जो मजबूर है विश्व समुदाय पर अपनी बात थोपने से,
विश्व की जनभावनाओं को त्याग, हर कार्य दिखताते है शौर्य से
मानव जनधन की चिन्ता नहीं. उन्हें गर्व है अस्त्रशस्त्रों से।।9।।

विश्व संस्था की करना अवहेलना (उपेक्षा),
उसके विश्व-जन स्वीकृत आदर्शों को नकारना,
न आपसी विचार विमर्श करना, न कमजोर को क्षमा करना.
शांति की चाह नहीं. केवल प्रभत्व स्थापित करना।

ततीय पक्ष

विश्व जनमत को स्वीकार है स.रा.स. संस्था.
सभी को इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था पर आस्था,
जो करती है सभी विश्व देशों की विषम परिस्थिति में उपचार.
तरीके ढूंढ रही है ताकि संतुष्ट हो जाए सारा संसार।
युद्ध देवी-आपदा देशों को तुरन्त करती है सहायता
अति विकसित/विकसित देशों को आदेश देती अंत:
चिकित्सा, उपचार, आश्रम, भोजन, वस्त्र की व्यवस्था,
पहचानो. परखो प्रशंसा करो. ए विश्व जन. उक्त संस्था की कथा।

ए अति विकसित धर्मावलम्बी शासित, कबीलो, सन्तों,
कहीं भटक न जाए मानव जाति, पैदा न हो आपसी द्वेष.
टूटने न पाये लक्ष्य (मानव हित) विश्व संस्था के,
समस्याए हल हो शांति से संकल्प से, आपसी विचार से.
सोच से. सहने से. संस्था को शक्तिशाली बनाने से।

यदि तुमने मानवता का किया बंटवारा,
तोड़ दिया प्रेम, भाईचारे, परहित, शांति का पिटारा.
तो प्रकृति कर देगी सीमित तुम्हारे शौर्य को,
तम्हारे विकास को तम्हारे गर्व को तम्हारे अनसंधानों को।

दबे रहोगे विश्व जनमत से
पश्चाताप करोगे तुम्हारे, टुकड़े होने से
जनता कपित होगी तम्हारे दष्कर्मो से

नहीं लौट पाएगा स्वाभिमान विश्व जनमत से।।

धर्मो के साथ-साथ एकात्मकता को पहचानो।
अपने देश के प्रभुत्व के साथ-साथ, विश्व परिवार को पहचानो
मानव हित विकास के साथ-साथ विश्व पर्यावरण को पहचानो
कर्म एवम् सिद्धान्तों के साथ-साथ शांति एवं एकता का लक्ष्य प्राप्त करो।।

यदि कोई देश आक्रमणकारी/अलगाववादी पागल हो जाता है.
अपनी आतंरिक शक्ति, अस्त्र, शस्त्र पर गर्वित होता है
समझाने, बुझाने, विश्व समुदाय द्वारा फिर भी ढाता कहर,
मुकाबला करो, विश्व समुदाय/ संस्था उससे तथा संगठित होकर.
उसके शासनाध्यक्षों को बदलकर।।

नोट- सं.रा.सं.-सयुक्त राष्ट्र संघ
अति विकसित - अति विकसित देश जैसै अमेरिका. ब्रिटेन
फ्रांस, जर्मनी, जापान इत्यादि।
धर्मावलम्बी पक्ष - जहाँ राजनीति धर्म के नियमों अनसार होती है
जैसे मिश्र, ईरान इत्यादि।
एकात्मकता - अपने धर्म को मानने के साथ-साथ दसरे धर्मो का सम्मान करना।

UNO ADDRESS
Secretary General
First Avanue Unplaza
Newyark City NY 10017 USA.

तम मानव हो क्या-कैसे?

तेरी तेजस्वी मुखाकृति कहां, शौर्य तुल्य आकृति कहां?
तेरा बाहबल कहां. तेरी पैनी भकटियां कहां?

तेरी चौड़ी चौड़ी घूरती आंखे तरेरती है किसे कहां?
अग्नि लौ निकलती कहां. मानव शत्र को मिटाती कहां?

तेरा लक्ष्य कहां, तेरा तीर निशान कहां?
तेरा स्वाभिमान कहां. तेरा स्वतंत्र निष्पक्ष कहां?

तेरी तीक्ष्ण बुद्धि कहां, तेरी विद्युत समान गति कहां?
तेरी आत्मा का आत्मज्ञान कहां. योगों में प्राणायाम कहां?

हिंसा, आक्रमणकारी के वध की औजार/तलवार कहां?
आंतकवादी. कटटरपंथी को धराशाही करने का कौशल कहां?

अति विकसितों के गर्व को झुकाने का प्रवृति कहां?
विलासितों को चैतन्य करने का मंत्र कहां?

प्रकृति के नियमों को पालन करने की प्रवृत्ति कहां?
सात्विक. राजस्व. तामस गणों के अन्तर की तझे पहचान कहां?

मानव मानव को वश करने का तुझे अन्तरज्ञान कहां?
राक्षसी विचारों को सात्विक विचारों में परिवर्तन की क्षमता कहां?

परहित ईमानदार, सुचरित्र, प्रभुत्व का तू रक्षक कहां?
उनको शांति समद्धशाली. खशहाली रखने का पैमाना कहां?

भूत देखा था, वर्तमान देख रहा है भविष्य है कहां?
भटकते हए थक गया है जीवन पर है त वहीं का वहीं?

राक्षस-रूपी भकम्प

प्रकृति का यह रूप कैसा,
भूगर्भ का अनोखा दहलाता कंपन जैसा,
मानव जन-धन क्षति का तांडव रूप जैसा,
बच्चों, जवानों, वद्धों की एकाएक असहाय मौत जैसा ?

किसी को पता नहीं, कब पैरों के धरती को हिलायेगा,
बड़े-बड़े ऊंचे भवनों को मिट्टी तथा सीमेन्ट का ढ़ेर बनाएगा.
उस ढेर के नीचे कितने ही मानवों की कब्र बनाएगा,
उन असहायों को कौन बचायेगा, प्रकति का यह रूप कैसा ?

मानव कहां सुरक्षित है, यह प्रश्न है अनोखा.
अपनी ही भूमि के ऊपर यह कैसा धोखा,
जीवन भर मेहनत कर बनाया यह खोखा,
फिर भी धोखा प्रकति का यह रूप कैसा।

भूगर्भ का यह दहलाता ताण्डव भूकम्प कहलाता,
जमीन का यह ऊपर बसने वालों को चुपचाप सुलाता।
फिर भी जो बच जाते, उन्हें विक्षिप्त पागल कर देता
अकेला असहाय जैसा, प्रकति का यह रूप कैसा।।

नदी, नाले, रास्ते बदलते, लुप्त हो जाते हैं
शीश गौरवान्वित करते समतल होते पर्वत।
मैदान परिवर्तित हो जाते हैं दरारों और गड्डों में
जंगलों जन्तओं की कौन सध ले. प्रकति की यह मद रूप कैसा?

हर कोई कहता, मानव का विकास होगा
मानव अमर होगा, पृथ्वी स्वर्ग लगेगी।
हमारा एकछत्र अधिकार होगा
फिर इस राक्षस रूपी महिषासर का वध कौन करेगा?